चौधरी सरवण कुमार कृषि विश्वविद्यालय, प्रिंटिंग प्रेस, पालमपुर

प्रसार पत्रक संख्या-5

भेड़ पालन में ऊन उत्पादन पर अच्छे दाम कैसे लें; एक नजर

पशु चिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार विभाग,
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय,
चौधरी सरवन कुमार हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय,
पालमपुर-176 062

भेड पालन में ऊन उत्पादन पर अच्छे दाम कैसे लें; एक नजर

प्राय: यह पाया जाता है कि हमारे प्रदेश में ऊन उत्पादकों को अपने उत्पादन पर अच्छे दाम नहीं मिलते है, इसके मुख्य कारण इस प्रकार से है :

1. भेडों में गंदगी :

भेडों की ऊन उतारने से पहले किसी डिटरजेन्ट पाऊडर से अच्छी तरह से नहला लेना चाहिए जिससे कि ऊन साफ निकलती है तथा ऊन उतारने में भी आसानी होती है। भेड़ की ऊन अगर मैली हो तो उससे ऊन के दाम पर असर पड़ता है, साफ और धुल्ली हुई ऊन का बाजार में अच्छा भाव मिलता है। आमतौर पर भेडों की ऊन में कांटे वगैरह लग जाते हैं, इसलिए भेडों को ऐसे रास्तों से नहीं ले जाना चाहिए जहां कांटे वाली झाड़ियां हों।

2. मशीन द्वारा ऊन न उतारना :

मशीन द्वारा ऊन निकालने से कई लाभ होते हैं। पहली दो शियरिंग की अपेक्षा अगली शियरिंग का रेशा लम्बा निकलता है व भेड को ऊन समानान्तर उतरती है। मशीन द्वारा ऊन कतरने के फलस्वरूप अगली कटाई में ऊन के उत्पादन में वृद्धि होती है।

3. ऊन उतारने के उपरान्त ग्रेडिंग नहीं करवाना:

ऊन की आरम्भिक श्रेणीकरण से अच्छे दाम मिलते हैं। ऊन कतरने के तुरन्त बाद भेड के पेट व टांगों की ऊन जिसका रेशा मोटा व छोटा होता है तथा अधिक मैला होता है को अलग करना चाहिए ताकि वह भेडों की बाकी ऊन में विसर्जित न हो जाए, यदि ऐसा न हुआ तो यह ऊन पूरी ऊन के ढेर के मूल्य को कम कर देती है इसके अतिरिक्त रेशों की मोटाई के अनुसार भी ऊन अलग करें ताकि बाजारी मूल्य में वृद्धि हो।

4. ऊन की उत्तमता :

ऊन के रेशों की मोटाई 18.1 माईक्रोन से 39.7 माईक्रोन तक होती है। अगर ऊन के रेशों की मोटाई कम हो तो हम उसे सबसे बढ़िया किस्म की ऊन मानते हैं और इसके वस्त्र आदि बनाने में इस्तेमाल किया जाता है और जैसे-2 ऊन के रेशों की मोटाई बढ़ती जाती है उसकी गुणवत्ता भी कम होती जाती है और इस प्रकार की ऊन का इस्तेमाल आमतौर पर गलीचे आदि बनाने के लिए किया जाता है। हमारे प्रदेश में पाई जाने वाली भेड़ों के ऊन के रेशों का घेरा आमतौर पर 22 से 28 माइक्रोन तक होता है, इसलिए विदेशी नस्ल के मेंढों को अपनी भेडों में मिलाना चाहिए। जिससे की बढ़िया किस्म की ऊन का उत्पादन हो और आमदनी बढ़े।

5. ऊन कतरना :

प्राय: ऐसा देखा गया है कि हमारे प्रदेश के भेड पालक अपनी भेड़ों की ऊन साल में तीन बार कतरते है, इससे भी ऊन के भाव पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि बाजार में लम्बे रेशों का ज्यादा भाव मिलता है। साल में ऊन के रेशों को तीन बार काटने पर रेशों की लम्बाई कम हो जाती है, इसलिए भेड पालकों से यह परामर्श है कि वे अपनी भेडों की ऊन की कटाई साल में दो बार ही कतरें।

आलेख :
डा. शिवानी कटोच, सहायक प्राध्यापक
एवं
डा. आलोक शर्मा, सह-प्राध्यापक